ॐ राम जानकी चरण सेवकाय नमः

द्वादशो अध्यायः

श्रीकृष्ण अर्जुन संवाद

'भक्ति योग'

अध्याय

दोहा- ज्ञानी ध्यानी है वही, सब पुरुषों में शीर्ष।
गीता पाठी के यहां, रहते हैं सब तीर्थ।।

शंका कर पुनि पार्थ ने, पूछा प्रभु से प्रश्न।
सुनकर समझाने लगे, अर्जुन को श्रीकृष्ण।।

आपके हैं, आपका नित करते पूजन ध्यान हैं।
या कि वे जो ब्रह्म सर में, करते नित स्नान हैं।। 01

भुवन मोहन रूप में जो, ध्यान रत हैं, मौन हैं।
या निरंकारी बतायें, श्रेष्ठ जग में कौन हैं।। 02

सहज स्वाभाविक है जिसका मुझमें निशिदिन ध्यान है।
वे परम प्रिय भक्त मुझको, श्रेष्ठ योगी मान्य हैं।। 03

ब्रह्म, चिन्तक, भूत हित रत, अचल मन निष्पाप हैं।
ऐसे सब सम भाव योगी भी मुझी को प्राप्त हैं।। 04

किन्तु यों अतिशय परिश्रम देह अधिकारी करें।
सर्वथा साकार दर्शित, मन निरंकारी करें।। 05

किन्तु मेरे रूप के आकार में जो लीन है।
कर्म गति मुझको समर्पित, स्वयं संज्ञा हीन है।। 06

ऐसे प्रेमी भक्त पाते, मुझसे सब उद्धार हैं।
प्रकट हो मैं स्वयं करता उनका भवनिधि पार है।। 07

बुद्धि, मन, कर मुझमें स्थित नित्य मेरी आस हो।
फिर न क्यों मेरे हृदय में पार्थ तेरा वास हो।। 08

किन्तु चंचल चित्त करता ध्यान में यदि वेंचना।
तो सतत अभ्यास से तू, कर मेरी अभ्यर्थना।। 09

यदि सतत अभ्यास का बनता नहीं संयोग है।
मत्परायण कर्म से भी होता मेरा योग है।। 10

यों भी यदि होता नहीं है, तुझको अर्जुन साध्यकर।
त्याग दे सब कर्म फल, मन बुद्धि अपने हाथ कर।। 11

मर्म बिन जाने किसी अभ्यास का क्या अर्थ है?
मूढ़वत् अभ्यास से तो पार्थ ज्ञान समर्थ है।। 12

ज्ञान से निश्चय ही निशिदिन, ध्यान मेरा श्रेष्ठ है।
कर्मफल त्यागी है तो कहना ही क्या कुरुश्रेष्ठ है।। 13

अस्तु जो सर्वस्व त्यागी, कर्मरत संतुष्ट है।
सर्वदा प्रिय मुझको अर्जुन, जिसको मेरा इष्ट है।। 14

हर्ष, विस्मय, भय रहित होता न जो उद्भ्रान्त है।
प्रिय है मुझको भक्त जिसका सर्वदा मन शांत है।। 15

पारदर्शी परम पावन, दुःख रहित है, मुक्त है।
जो न कुछ आरम्भ करता, वह मेरा प्रिय भक्त है।। 16

यो न हृश्यति, यों न देष्टि, यो न सोचति कांक्षति।
जो शुभाशुभ परित्यागी भक्त मेरा है वो प्रिय।। 17

मित्र, शत्रु, मान या अपमान में जो शांत हो।
वो मेरा प्रिय भक्त है, किंचित न फिर आक्रान्त है।। 18

निन्दा स्तुति में उभय चिन्तक सदा सन्तुष्ट है।
गृह में भी गृह हीन वत, समझो मेरा प्रिय भक्त है।। 19

पीते जो विश्वास युत इस धर्म अमृत सार को।
भक्त ऐसे सर्वदा पाते हैं मेरे प्यार को।। 20

दोहा- नित्य नियम से जो करे गीता का अभ्यास।
रहता उसके हृदय में मेरा सदा निवास।।

इति श्रीकृष्ण अर्जुन संवाद
'भक्ति योग' द्वादश अध्याय समाप्त।